

4. हिंदी (आधार) (कोड संख्या-302)

(2017-18)

प्रस्तावना

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की आवश्यकता होती है, जहाँ भाषा का प्रयोग भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम, साहित्यिक बोध के साथ-साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा महत्त्व देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान/समाजिक विज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोज़गार में लग जाएंगे। वहाँ कामकाजी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की रुचि जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठभूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थियों के संबंध को सहज बनाएगा। विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंगे। वे यथार्थ को अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पाएँगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेगा।

उद्देश्य

- इन माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र भाषा संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैये का विकास।
- पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा दृष्टिकोण की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।

- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की स्फूर्ति, विकास एवं उसमें साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की आवश्यकता के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।
- विद्यार्थी में किसी भी अपरिचित विषय से संबंधित प्रासंगिक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और उन्हें व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखिक और लिखित प्रस्तुति करने की क्षमता का विकास।

शिक्षण-युक्तियाँ

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यह है कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंठस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीज़ों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षिका के बीच निर्बाध संवाद ज़रूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज़्यादा स्पष्टता उनमें आ पाएगी।
- भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में किसी शब्द विशेष के प्रयोग पर निषेध को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ ज़रूरी है कि विद्यार्थियों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से काम नहीं चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना ज़रूरी है।
- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना ज़रूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का अधिकार और ज्ञान रखते हैं। उनकी राय को प्राथमिकता देने और उसे बेहतर तरीके से पुनः प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहां बहुत उपयोगी होगी।
- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी ज़रूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षकों को अक्सर एक कुशल संयोजक की भूमिका में शिक्षकों स्वयं को देखना होगा, जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखते, उसके कच्चे-पक्के वक्तव्य को मानक भाषा-शैली में ढाल कर उसे एक आभा दे देते हैं और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देते हैं।

- अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन तथा उसकी मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षकों के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षकों को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए विषय प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की निस्सीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध-संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न ले। तैयार शुदा सामग्री के लोभ से, बाध्यतावश ही सही मुक्ति पाकर विद्यार्थी नये तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के यत्न में सन्नद्ध होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार, संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्यार्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षकों को उचित हावभाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए ज़रूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन-शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृत्तचित्रों और फीचर फिल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के ज़रिए सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षिका उनका कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुंचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ पाएँगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।
- कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, ट्यूटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूहचर्चा, परियोजना, कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह ज़रूरी है कि समय-समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी विद्यालय में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।
- भिन्न क्षमता वाले विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा उन्हें किसी भी प्रकार से अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- कक्षा में शिक्षक को हर प्रकार की विभिन्नता और लिंग जाति, धर्म, वर्ग के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।

हिंदी (आधार) (कोड सं० 302)

कक्षा-12 (2017-18)

खण्ड	विषय	अंक
(क)	अपठित अंश	20
	1. अपठित गद्यांश - बोध (गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न [शीर्षक पर प्रश्न (1 अंक) + 7 लघूत्तरात्मक (2x7)]	15
	2. अपठित काव्यांश-बोध (काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न) (1x5)	05
(ख)	कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन	25
	3. किसी एक विषय पर अनुच्छेद	05
	4. कार्यालयी पत्र	05
	5. प्रिंट माध्यम, सम्पादकीय, रिपोर्ट, आलेख आदि पर पाँच अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न	05
	6. किसी एक विषय पर आलेख अथवा हाल ही में पढ़ी पुस्तक की समीक्षा	05
	7. जीवन-संदर्भों से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों पर फीचर लेखन	05
(ग)	पाठ्यपुस्तक	55
	1) आरोह भाग-2	40
	अ) काव्य भाग	20
	8. दो काव्यांशों में से किसी एक पर अर्थग्रहण के चार प्रश्न (2x4)	08
	9. काव्यांश के सौंदर्यबोध पर किसी एक काव्यांश पर तीन प्रश्न (2x3)	06
	10. कविताओं की विषय-वस्तु से संबंधित दो लघूत्तरात्मक प्रश्न (3+3) लघु	06
	ब) गद्य भाग-2 (पूरक पाठ्य पुस्तक)	20
	11. एक गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण के चार प्रश्न (2+2+2+2)	08
	12. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित चार बोधात्मक प्रश्न (3+3+3+3)	12
	2) वितान भाग-2	15
	13. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित एक मूल्यपरक प्रश्न (1x5)	05
	14. विषयवस्तु पर आधारित दो निबंधात्मक प्रश्न (5+5)	10
	कुल	100

प्रस्तावित पुस्तकें:

1. आरोह भाग-2 एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
2. वितान भाग-2 एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
3. 'अभिव्यक्ति और माध्यम' एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित (खण्ड- ख कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन हेतु)

प्रश्नपत्र का प्रश्नानुसार विश्लेषण एवं प्रारूप
हिन्दी पाठ्यक्रम-XII आधार (2017-18)

समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 100

क्र. सं.	प्रश्नों का प्रारूप	दक्षता परीक्षण/ अधिगम परिणाम	1 अंक	2 अंक	3 अंक	5 अंक	कुल अंक	प्रतिशत
1	अपठित बोध (पठन कौशल)	अवधारणात्मक बोध, अर्थग्रहण, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, शब्द-ज्ञान व भाषिक प्रयोग, सृजनात्मक, मौलिकता।	6	7	—	—	20	20%
2	कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन (लेखन कौशल)	● संकेत बिन्दुओं का विस्तार, अपने मत की अभिव्यक्ति, सोदाहरण समझना, औचित्य निर्धारण, भाषा में प्रवाहमयता, सटीक शैली, उचित प्रारूप का प्रयोग, अभिव्यक्ति की मौलिकता, सृजनात्मकता, सृजनात्मकता एवं तर्किकता	5	—	—	4	25	25%
3	पाठ्यपुस्तकें	● प्रत्यास्मरण, विषयवस्तु का बोध एवं व्याख्या, अर्थग्रहण (भावग्रहण), लेखक के मनोभावों को समझना, शब्दों का प्रसंगानुकूल अर्थ समझना, आलोचनात्मक चिंतन, तार्किकता, सराहना, साहित्यिक परंपराओं के परिप्रेक्ष में मूल्यांकन, विश्लेषण, सृजनात्मकता, कल्पनाशीलता, कार्य-कारण संबंध स्थापित करना, साम्यता एवं अंतरों की पहचान, अभिव्यक्ति में मौलिकता एवं जीवन-मूल्यों की पहचान।	—	11	6	3	55	55%
कुल			1x11=11	2x18=36	3x6=18	5x7=35	100	100%